वहेड़ी-बरेली(उ.प्र.)। संगीतमय राजयोग शिविर के पश्चात् केसर इंटरप्राइज़ेज़ के जी.एम. एस.एस. शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुखदेवी।

रापरकच्छ। विधायक वाघजीभाई पटेल की स्मृति में आयोजित 'कुटुम्ब कल्याणकारी कथा' कार्यक्रम में कथाकार अश्विनभाई जोषी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज व ब्र.कु. शोभना।

बिलासपुर-छ.ग.। नवनिर्वाचित सांसद लखनलाल साहू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता।

राजगढ़-म.प्र.। 'धरा पर शान्ति महोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं व्यास जी,वरिष्ठ वकील, श्रीमती मोना सुस्ताती,जनपद अध्यक्ष, नम्रता विजयवर्गी, श्रीमती सिंघी, समाजसेवी, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा व ब्र.कु. मधु।

आणंद-गुज.। 'नशामुक्ति अभियान' की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हंसा बहन,नगरपालिका उप-प्रमुख, ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. प्रेमिका तथा अन्य।

हरिद्वार। हरिवंश चुग,उपाध्यक्ष,हरिद्वार विकास प्राधिकरण के साथ ज्ञानचर्चा के बाद ओमशांति मीडिया के बारे में बताते हुए ब्र.कु. मीना, संचालिका,स्थानीय सेवाकेन्द्र।

मैं और संतुष्टता

'संतोषं परम सुखम्' अर्थात् संतोष सर्व गुणों की खान है, सर्वश्रेष्ठ धन है। जो कुछ है उसे ईश्वरीय देन समझना। इस धन के सामने सारे धन तुच्छ हैं इसलिए दूसरों की प्राप्ति से, भाग्य से तुलना न करते जो हिस्से में आया उसमें राजी-खुशी रहना है। और यही शुभकामना रखना है कि,

'साईं इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।'

सच्चा संतोषी कभी लोभ नहीं करता, वह जानता है कि संतोष का फल मीठा होता है।

एक बार किसी नगर में अकाल पड़ गया। उस नगर के जमींदार ने यह कहलवा दिया कि मैं प्रतिदिन बच्चों को खाने के लिए रोटी बाटूंगा, हमारे यहाँ सभी बच्चे इकठ्ठे हो जाएं। सभी बच्चों के आने पर वह जमींदार अपने हाथों से दो-दो रोटी प्रत्येक बच्चे को देता था। किंतु एक दस वर्ष की बच्ची जो बड़ी ही भोली-भाली थी, एकांत में खड़ी रहती थी। उसकी जब बारी आती अंत में सबसे छोटी रोटी ले लेती थी। अन्य सभी बच्चे उसे धक्का देकर बड़ी-बड़ी रोटियां ले लेते थे। इसी तरह से रोज़ वह बच्ची अंत में छोटी रोटी खुशी-खुशी लेकर घर पर अपनी माँ को देती थी। उधर माँ और बेटी के सिवाय कोई भी नहीं था। रोटी खाकर दोनो भगवान का गुणगान करते हुए सुख-शांति से सो जाते थे।

इसी प्रकार एक दिन वह बच्ची रोटी लेकर घर आयी। माँ ने जब रोटी तोड़ी तो उसमें से सोने के तीन छोटे-छोटे दाने मिले। माँ ने कहा, ''बेटी, रोटी में मिले यह दाने जमींदार को दे आओ।''

बच्ची टूटी हुई रोटी में सोने के दाने रखकर जमींदार के पास पहुंची। कहने लगी-बाबूजी, ये लो अपने सोने के दाने। जमींदार भौचक्का रह गया। उस बच्ची ने सारा किस्सा ज़मींदार को सुनाया। जमींदार सब कुछ सुनते उस बच्ची को अपलक देख रहा था। वह जानता था कि यह बच्ची अंत में शान्ति से अपने हिस्से की रोटी ले जाती थी। जमींदार ने कहा, बेटी तुम इसे ले जाओ। यह तुम्हारे संतोष का फल है। बच्ची ने उत्तर दिया-बाबूजी, संतोष का फल तो मुझे पहले ही प्राप्त हो गया कि भीड़ में धक्के नहीं खाने पड़े। जमींदार यही सोचता रहा कि बच्ची है तो छोटी, परन्तु बात बड़ी ही ऊंची और सयानी करती है। बाद में जमींदार ने उस बच्ची को धर्म-पुत्री बनाकर समूचे सम्पत्ति का उत्तराधिकार सौंप दिया। वैसे भी सन्तानहीन होने के कारण उसे सन्तान की आवश्यकता थी।

स्थूल धन से भी संतोष धन श्रेष्ठ है। उस बच्ची को संतोष का कितना मीठा फल मिल गया। वह बच्ची सचमुच संतुष्टमणि थी। यही संतुष्टता भगवान को मंज़ूर है। भाग्यशाली बच्चे ही संतुष्टमणि होते हैं। 'पाना था जो पा लिया' इसी सोच में वे संतुष्ट रहते हैं।

ऐसी संतुष्टमणि आत्मायें अपने संतुष्ट स्वरूप से औरों के जीवन में भी सुख-शांति, संतुष्टता का प्रकाश दीप जलाते हैं। संतुष्ट होने की दवा भी कितनी सस्ती हमें परमात्मा ने बतायी है। बस एक 'मेरा बाबा'। संतुष्टमणि बेफिक्र बादशाह होते हैं। उन्होंने सर्वदा डबल लाइट का ताज पहन रखा है। यह ताज पहनने की विधि भी कितनी आसान है। बस मेरे को तेरे में परिवर्तन करना। एक ताज है हल्के, निश्चिंतता का और दूसरा ताज है पवित्रता का, स्वच्छता, शुद्धता का।

आनेवाला समय बड़ा कठिन है। बाढ़, अकाल, भूकम्प , सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदायें अपना जलवा दिखायेंगी। बीमारियां कहर ढ़ायेंगी। ऐसे समय में व्याधिग्रस्त बीमार होते भी मन खुश रहेगा तभी दु:ख-मुक्त, वेदना मुक्ति की अनुभूति हम कर पायेंगे। संतुष्टता बड़ी शक्ति है। सारी समस्याओं का समाधान हमारी संतुष्टता है। संगम युग परिवर्तन युग है, इसमें पुराने संस्कार, वृत्तियों को बदलना है। यह परिवर्तन शिव धनुष है। शिव बाबा की शिक्षा कालातीत है। इसी ज्ञान-योग के आधार पर विश्व परिवर्तन को अंजाम देने का दायित्व हम बच्चों का है। संसार में बंधुत्व, एकता, शान्ति स्थापित करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान नितान्त आवश्यक है। उसके लिए सैनिक नहीं शस्त्र, प्रवासी नहीं रास्ता, विद्यार्थी नहीं विद्यालय बदलने की जरूरत है। प्रवृत्ति नहीं वृत्ति परिवर्तन हो। सच्चा संतोष पैसे की अमीरी से नहीं संस्कारों की समृद्धि से प्राप्त होगा।

आज दिन की जगमगाहट में भी हमारा मन अंधेरे से व्याप्त है। यह अंधेरा अज्ञान का है। सूर्यास्त के बाद भी जिसके अंदर ज्ञान का दीप प्रज्वलित है वही सच्चा ज्ञानी है। आत्म ज्ञानी कभी उदास, विपण्ण नहीं होता। वह सदैव हंसमुख, संतुष्ट व प्रसन्नचित्त रहता है।

मेरे रास्ते में चारो तरफ व्यर्थ के जाल बिखरे पड़े हैं। इन व्यर्थों के कारण मेरी समर्थी समाप्त होकर मेरी संतुष्टता खतरे में पड़ी है। इसलिए मुझे विवेक से काम लेना है। निर्मोही, अनासक्त बनना है। किसी भी हालत में परमपिता का हाथ नहीं छोड़ना है। ध्यान रहे मैं शापित देवता हूं, माया ने मुझे शापित किया है। इसी कारण मेरी जीवनशक्ति क्षीण हो गयी है। यह जीवनशक्ति ज्ञान और योग से ही संप्रेषित होगी। मुझे श्रीमत का पूरा पालन करना है। फाइन होने से ही मेरी फाइल नहीं बनेगी। परमात्मा की निरंतर याद से ही मेरी जीवन यात्रा आनंदमय होगी।

आत्मा की महत्ता निर्विवाद है फिर भी कर्म करने के लिए मिले हुए देह का महत्व भी कम नहीं है। शरीर तो धर्म साधन है। आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए देह जरूरी है। जब देह की बात होती है तो उसके हर अवयव का मूल्य समझ में आता है। आत्मा की नियंत्रण कक्षा के संतरी आंख, नाक, कान, मुख, जीभ ठीक नहीं होंगे तो जीवात्मा की जीवनयात्रा आनंदयात्रा कैसे होगी? भले वो आत्मा के सेवक हैं फिर भी उनका महत्व अनन्य है। आंखें तो विश्व को अपनी गोद में समाने वाली दूरबीन हैं, कान आत्मा की श्रुति हैं। कान के माध्यम से हम संवाद,संगीत सुन सकते हैं। नाक से प्राणवायु लेकर देह में प्राण फूंकते हैं, मुख से बातचीत होती है, भावना व्यक्त कर सकते हैं। जीभ द्वारा रुचि का अनुभव करते हैं। अन्न पेट में जाकर पोषण देता है लेकिन हम इन कर्मेंद्रियों का परामर्श बहुत कम करते हैं। इसलिए माया उन्हें सहज वश कर लेती है। जब इनकी सेहत बिगड़ती है तब ही हम सावधान होते हैं। इसलिए मन की खुशी, उमंग-उत्साह के लिए उनको सम्भालना जरूरी हो जाता है। समय-समयान्तर विश्राम आवश्यक है।

बुरी आदतों एवं व्यसनों से बचना है। क्योंकि उनसे हमारी क्षमता प्रभावित होती है। देह क्षीण होता है फिर आत्मा भी कमज़ोर होती है। ध्यान रहे मेरी संतुष्टि मुझ आत्मा की संपत्ति है। देह का हिसाब-किताब मेरा कर्मभोग है लेकिन मुझे सदा संतुष्ट व प्रसन्न रहना है। बेफिक्र बादशाह यह मेरी पहचान है, स्वमान है। मैं खुशहाल, आनंदस्वरूप आत्मा हूं यह कभी नहीं भूलना है। संत तुकाराम कहते हैं-मन को प्रसन्न करो, वही सर्व सिद्धि का कारण है। हम खुशकिस्मत हैं, हम योगी हैं। योगी हमेशा स्थिरचित्त होता है। मन की सावधानी, दक्षता हमें निर्विघ्न रखती है।

जीना एक सफर है, यात्रा है, मैं यात्री हूं। मैं इस धरती पर मेहमान हूं, सफर के सब दिन एक जैसे नहीं होते। उनकी विविधता का मज़ा लेना है। इस विविधता में ही नवीनता ढूंढनी है। तभी यह यात्रा सुखद तथा रमणीक होगी। इस घड़ी इस यात्रा में स्वयं विघ्न-विनाशक पिता साथ है तो चिंता किस बात की। इस यात्रा में हमारी खुशी, संतोष कायम रहे इसलिए शिव पिता ने आत्मा की ढ़ाल दी है कि हमें साक्षीदृष्टा होकर जीना है। ड्रामा के किसी भी दृश्य से प्रभावित नहीं होना है। निर्भय होकर समस्याओं का सामना करना है। यह जीने की नई दृष्टि सकारात्मक होने के कारण हमें व्यर्थ से, विघ्नों से बचाती है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। हमारे संकल्प, सोंच समर्थ होते हैं जो हमें सफलता प्रदान करते हैं। हमारी खुशी, प्रसन्नता दूसरों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन जाती है। प्रसन्नता आयु बढ़ाती है।

इस सृष्टि मंच पर मैं एक अभिनेता हूं। यह ड्रामा समाप्त होने पर मुझे घर जाना है। इस दृष्टिकोण से जीयेंगे तो सारे प्रश्न खत्म होंगे फिर बचेंगे सिर्फ उत्तर, जो इत्र का सुगंध देंगे। क्योंकि इस नाटक के सारे सुख-दुख विनाशी हैं, सत्य केवल एक ही है कि मैं आत्मा हूं। मेरे साथ खुदा दोस्त है। मैं खुदाई खिदमतगार हूं। मेरी खुशी, संतुष्टि यही मेरी संघर्षशक्ति है। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। अमृतवेले से ही परमात्मा हम बच्चों पर वरदानों की वर्षा करता है। उसका फायदा लेना हमारा कायदा बने। वर्ष के पहले दिन से दृढ़ संकल्प करने वालों को पुरुषार्थ में विशेष मदद देने की बापदादा ने हमें अनुपम सौगात दी है।

संतुष्टता की शक्ति से विशेष कार्य करने वालों को खास सफलता मिलेगी यह परमपिता का वरदान है। संगमयुग के इस विशेष युग में विशेषता के बीज का सर्वश्रेष्ठ फल संतुष्टता है। संतुष्ट रहना और औरों को करना यही विशेष आत्मा का लक्षण है। संतुष्टता के प्रकम्पन चारो तरफ फैलाने की कमाल और धमाल हम बच्चों को करनी है। इसके लिए हिम्मते बच्चे मदद खुदा यह बाप का वायदा है। -ब्र.कु. गुणवंत पाटिल, पुणे।

हिंगोली-बांगर नगर(महा.)। नव निर्मित सेवाकेन्द्र 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीलू,माउण्ट आबू, ब्र.कु.सोमप्रभा,सोलापुर, ब्र.कु.सुनंदा,क्षेत्रीय संचालिका, ब्र.कु.शोभा,गोवा, ब्र.कु.अरुणा, संतोष बांगर, दिलीप बांगर, माधवराव पाटील, ब्र.कु. ज्ञानेश्वर तथा अन्य।